ISSN- 2229-4929

July 2021

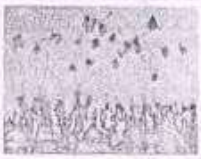

TRUE COPY

Chief Editor:
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor:
Dr. Purandhar Dhanapal Nare
Principal,
Night College of Arts and Commerce,
Ichalkaranji

Co-Editor:
Dr. Madhav. R. Mendkar

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara

Address
'Pranav', Rukmenagar,
Thodga Road, Ahmadpur, Dist- Latur 413515 (MS)

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1.	रंगनाथ पठारे यांच्या 'दु:खाचे श्वापद' मधील घटनाप्रसंग प्रा. डॉ. हेमराज बाळासाहेब शिरदीस	1-2
2	मानव उन्नयन हेतु किताबों का आग्रह करती कविताएँ डॉ. प्रवीणकुमार ग. चौगुले	3-6
3	महात्मा गांधींचा धार्मिक व अध्यात्मिक दृष्टीकोन- एक दृष्टीक्षेप प्रा.डॉ. सुनिल अजाबराव पाटील	7-10
4	वैश्विकतेला कवेत घेणारी आदिवासी कविता प्रा.चिंतामण धिंदळे	11-14
5	उच्चशिक्षणातील मराठी भाषेच्या विकासाचे आव्हान डॉ. रविकांत शिंदे	15-17
6	आत्मकथा में मानवतावादी चिंतन डॉ. दिलीपकुमार कसबे	18-20
7	अमेरिकेच्या 46 व्या राष्ट्राध्यक्ष पदाच्या निवडणुकीतील मतानालय डॉ. शरद बाबुराव सोनवणे	21-24
8	उच्चशिक्षा नीति की समस्याएँ डॉ. मा. सा. गायकवाड	25-27
9	शिक्षा के लिए छटपटाते उपेक्षित किन्नरों की दास्ता: 'दरमियाना' डॉ. एकनाथ शीपती पाटील	28-30
10	हिंदी दलित कविता के प्रेरणास्त्रोत : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. रणदे परसराम रामजी	31-34
11	ग्रामीण भागातील उच्च शिक्षण घेणाऱ्या मुलींसमोरील समस्या डॉ. सुप्रिया चंद्रशेखर सोळे	35-37
12	आंचलिक उपन्यासों में दलित जीवन विकास के विविध आयाम डॉ.शंकर गंगाधर शिवशेट्टे	38-43
13	कबीरदास के काव्य में दार्शनिक चेतना की अभिव्यक्ति डॉ. सुमन देवी	44-46
14	सूरदास के साहित्य में लोक जीवन और संस्कृति डॉ डालकीकर शोभा नारायणराव	47-48
15	आर्थिक आधार पर भारतीय जनजातियों का वर्गीकरण डॉ. संजय साईनवाड	49-51
16	ग्लोबल गाँव के देवता' और 'टाहो' उपन्यास में आदिवासी-जीवन गोंडाकुर लक्ष्मण पोतन्ना	52-53
17	वेश्याओं के मुक्ति कि अभिव्यक्ति उपन्यास 'क्या मुझे खरीदोगे ?' प्रा. विकास कुंडलिक सिरसाठे	54-56
18	किशोरावस्थेतील वर्तन विषयक समस्या आणिमानसिक आरोग्याचा अभ्यास डॉ. मिलिंद भगवानराव बचुटे,	57-59
19	शिवणकला कौशल्य संपादनाने महिलांमध्ये होणारा बदल उर्मिला एस. खोत , डॉ. मंजुषा मोळवणे	60-63
20	जागतिकीकरण व मराठी ग्रामीण कादंबरी डॉ.योगिता मारुती गंधवणे	64-66

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara.

'Akshar Wangmay' UGC Care Listed, International Research Journal, ISSN: 2229-4929, July 2021, Special Issue, Volume-IV
"Challenges of Higher Education in India to Compete with Global Level"

हिंदी दलित कविता के प्रेरणास्त्रोत : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

प्रा. रगडे परसराम रामजी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शंकरराव जगताप आर्टस् एण्ड कॉमर्स कॉलेज,
मु.पो. वाघोली, ता. कोरेगांव, जि. सातारा, संलग्न : शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

प्रस्तावना -

भारतीय सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यक एवं सांस्कृतिक, बदलाव के पिछे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचारों की प्रेरणा रही है। प्रत्येक कार्य के पीछे प्रेरणा होती है, प्रेरणा के बिना कोई भी कार्य पूरा नहीं होता है। साहित्य के भी अपने प्रेरणा स्त्रोत रहे है। 21 वीं शताब्दी का हिंदी साहित्य [illegible]

[illegible]

बीज शब्द :- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, दलित, विषमता राजनीति, 'अम्बेडकरी विचार', कविता, स्वातंत्र, बंधुता, नीला रंग, भारतीय संविधान, मानवतावाद, प्रज्ञा, शिक्षा, पुस्तकप्रेम और राजसत्ता, ।

दलित कवि के प्रेरणास्त्रोत :- डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर को प्रेरणास्त्रोत मानकर दलित कवियों ने कविताओं का सृजन किया है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के 'पढो, संगठित हो और संघर्ष करो' का संदेश दलित कवियों का प्रेरणास्त्रोत रहा है। उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक किए कार्य एवं उनसे निर्माण हुए विचारों को दलित कवि अपने काव्य-सृजन की प्रेरणा मानते है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों के कारण दलित साहित्य का उदभव एवं विकास हुआ है। मराठी एवं हिंदी दलित साहित्य के प्रेरणास्त्रोत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर है। मराठी में 1960 के बाद एवं हिंदी में 1980 के बाद दलित कविताएँ लिखी जाने लगी। अत: कहा जा सकता है कि हिंदी दलित साहित्य के जनक एवं प्रेरणास्त्रोत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर है। इस संदर्भ में विद्वानों की विचार प्राप्त होती है-

1) **फातिमा जलिल :-** "आंबेडकर की विचार प्रणाली से ही दलित साहित्य का उद्भव हुआ है, उनसे प्रेरणा ग्रहण करके दलितों ने अपना साहित्य सृजन किया।"[1]

2) **डॉ. भरत धोंडिराम सगरे :-** " दलित कविता बुध्द, आंबेडकर की सम्यक क्रांति का प्रेरक मंत्र है। इसका केंद्र सर्वहारा मानव है। अतीत की अनुदारता, वर्तमान की निष्ठुरता भविष्य की चिंता दलित कविता के केंद्रीय विषय है। हाशियेपर खडा यह वर्ग अब साहित्य का केंद्र बना है, जिसका प्रेरणास्त्रोत आंबेडकर दर्शन है। इसी कारण इसे 'आंबेडकरी कविता' भी काहा जा सकता है।"[2]

2) **प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर :-** "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने अपने पूरे जीवनकाल में मानवमुक्ति के लिए जो आंदोलन खडे किए थे, भौतिक जीवन जिनेवाले हर व्यक्ति को समता, स्वातंत्र, बंधुता और न्याय का संविधनिक अधिकार देने के लिए जो वैचारिक संघर्ष किए थे, उन्ही आंदोलनो और वैचारिक संघर्ष का सारांश है- आंबेडकरी विचारधारा।"[3]

अत: कहा जा सकता है कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की विचारधारा का मतलब है, व्यक्तिद्वारा अपने भौतिक नैतिक जीवन में समता, स्वातंत्रता, बंधुता और न्याय के संविधानिक अधिकार प्राप्त करने के लिए किया वैचारिक संघर्ष। यह विचारधारा समता, बंधुता और सामाजिक न्याय के लिए सतत संघर्ष करते हुए इहवादी, अनात्मावादी, निरीश्वरवादी, बुध्दीप्रमाण्यवादी, विवेकवादी, विज्ञानवादी, धर्मातीत, मानवतावादी वैचारिक मूल्यों की दृष्टि देने का प्रयत्न करती है। यह विचारधारा विज्ञानधारित धम्म का स्वीकार करते हुए प्रज्ञा, शील, करूणा, अहिंसा, प्रेम शांति जैसे मानवीय मूल्यों का जनमानस में प्रचार एवं प्रसार करती है।

TRUE COPY
PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon,Dist-Satara.

कवि दामोदर मोरे जी का काव्यसंग्रह 'नीले शब्दों की छाया में' के माध्यम से डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों का प्रतिपादन हुआ है। संपूर्ण कविता संग्रह में कुल चालीस कविताएँ है। कविता संग्रह सन 2007 में प्रकाशित हुआ है। कवि कविता संग्रह के नाम के संदर्भ में कहता है कि, नीला रंग समानता का प्रतीक है, आसमान नीला एवं अनंत होता है। डॉ. बाबासाहेब जी को प्रज्ञा की उपमा देते हुए कहते है कि इस सूरज के माध्यम से हमें उर्जा प्राप्त होती है, नीला रंग डॉ. बाबासाहेब के विचारों का प्रतीक है। बाबासाहेब के विचार हमारे लिए पॉवर हाउस का काम करते है – " **हमें नीला अनंत आसमान प्यारा है और हमारे आसमान में चमकनेवाला प्रज्ञा सूरज हमें प्यारा है। इस प्रज्ञा सूरज का नाम है – डॉ. बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर इस प्रज्ञा सूरज ने भारतीय संविधान के माध्यम से ऐसा नीला आसमान हमें उडने के लिए दिया है – जहाँ जातिभेद, धर्मभेद, प्रांतभेद, भाषाभेद का कोई गतिरोध नहीं है। नीला रंग समानता एवं स्वातंत्र का प्रतीक है। इसी कारण नीले रंग को डॉ. आंबेडकरने ध्वजा के रूप में अपनाया। नीला रंग अब आंबेडकरी तत्वज्ञान का प्रतीक बन गया है। नीले रंग की छाया में हमें प्रेरणा मिलती है। 'प्रज्ञा सूरज'** हमारा उर्जा – केंद्र है। वही हमारा पॉवर हाउस है"[4]

1) नीले रंग सर्वसमावेशकता का प्रतीक -

नीला आसमान स्वतंत्रता एवं समता के प्रतीक है। संविधान में सभी के लिए समता की बात को उठाया है। स्त्री पुरुष समता, जातिभेद का विरोध, स्पृश्य-अस्पृश्य का विरोध देखने को मिल जाता है। भारतीय संविधान को बदलना आसान काम नहीं है। सर्वसामान्य व्यक्ति जाग्रत होकर इस मनुवादी व्यवस्था का विरोध करने लगता है। प्रज्ञा सूरज के नीले रंग को बदलना आसान नहीं है – **"उन्होंने इतिहास बदलने के काम में / विहारों को मंदिर बनाया / पर बदल न सके नीला रंग प्रज्ञा सूरज का किला रहा अमर।"**[5] यही भाव 'नीली सुबह' कविता के माध्यम से व्यक्त हुई है। कवि आशावान है कि 21 वी शताब्दी में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक क्षेत्र में बड़ा बदलाव होगा चिंता हुआ समय मरणासन्न हो चुका है। अत: बाबासाहब जी के बदलाव के या समाजिक परिवर्तन के विचारों को मानने से निश्चित रूप से बीसवी शताब्दी का अंत होनेवाला है। इसी कारण कौवे, कौवे-काँव-काँव करने लगे है – **"ये कौवे / काँव-काँव करते-करते / क्यों इकट्ठे हो रहे है / क्या वे / बीसवीं सदी को / श्रध्दांजलि दे रहे है।"**[6] यह परिवर्तन 21वीं शताब्दी का है। भूमण्डलीकरण के कारण हाशिए का समाज मुख्यधारा में आने लगा है। सामाजिक परिवर्तन के कारण आंबेडकरी विचारों का अवलंब जगत में होने लगा है – **"समय के घोडे पर सवार होकर / अँधेरे को रौंदते हुए / सूरज को कौन ला रहा है। / क्या ये / इक्कीसवीं सदी की / नीली सुबह तो नहीं है।"**[7]

2) विषमता का विरोध :-

कवि दामोदर मोरे जी ने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा प्रतिपादीत सामाजिक समता का समर्थन किया है। समाज में जीवन यापन करते समय में प्रत्येक व्यक्ति को समानता पूर्ण जीवन जीना चाहिए इसी बात को कवि ने 'क्यों रोशनी चुरा रहा है।' 'रोटी का गान', 'शहीदों का गान', 'नया सूरज' तथा 'गुलाम' कविता के द्वारा अभिव्यक्त किया है। असमानताकी ओर कवि हमारा ध्यान आकर्षित करता हुआ कहता है जहाँ पर पहले से ही खुशाली है, समृध्दता है वहाँ और देने की जरूरत नहीं होती, परंतु सामाजिक असमानता की ओर कोई ध्यान नहीं देता। कवि कहना चाहता है कि सामाजिक उत्पीडन से मुझे छुटकारा मिले इसलिए मैं कोशिश करता हूँ परंतु, मुझे मिलने नहीं दी जाति – **"काँटों के फला / यह घना अंधेरा / क्यों मुझे ही / डरा रहा है / मुझे देखते ही / सूरज / क्यों रोशनी चुरा रहा है।"**[8] 'रोटी का गान' तथा 'शहीदों का गान' कविता के माध्यम से कवि दामोदर मोरे ने सामाजिक विषमता का विरोध किया है। कवि ने दलित, आदिवासी, घुमन्तु आदि के जीवन का चित्रण करते हुए कहा है कि, इन लोगों के प्रति आज भी उच्चवर्ग का रवैया बदला नहीं है।

3) ज्ञान एवं शिक्षा का महत्त्व :-

मनुष्य के जीवन में शिक्षा और ज्ञान का का अनन्यसाधारण महत्व है। व्यक्तिपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार एवं अज्ञानता से बहार निकालने का काम शिक्षा करती है। 'नि:शब्द की खिड़की' कविता के द्वारा जो गूंगे

बहरे होते हैं उनकी भाषा कविता के द्वारा व्यक्त होती है। आंबेडकरी जनता को अपनी भाषा मिल चुकी है, अपनी भावनाओं को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति करने लगे है। ध्यान के कारण ज्ञान की वृध्दि होती है। ध्यान एक ज्ञान है शून्य का – **"ध्यान है / एक ज्ञान / अज्ञान का / ध्यान है / एक ज्ञान / शून्य का।"**[9] ज्ञान के बलबुतेपर व्यक्ति बोलने लगता है। अपनों पर होनवाले अन्याय अत्याचारों को समाज के सामने व्यक्त करने लगता है। शिक्षा-दीक्षा के कारण बहरे-गूँगे बोलने लगे है। बाबासाहेब जी कहाते है कि स्वाभिमान को जगाने का काम शिक्षा करती है – **"एक ध्यान / जो बोलता है / गूँगे-बहरों की भाषा / जो खोलता है / नि:शब्द की खिडकी।"**[10]

4) आंबेडकरवाद मानवतावाद का दूसरा नाम :-

अम्बेडकरवादी विचार दर्शन समस्त मानव सुदाय का दर्शन है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने अपने जीवन काल के दौरान जिन विचारों का प्रतिपादन किया, आंदोलनों को चलाया वह मानवता से संबंधित रहे है। 'करूणा का कमल' कविता के माध्यम से कवि दामोदर मोरे जी ने मानवतावाद का प्रतिपादन किया है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के मानवतावादी विचार गौतम बुध्द, संत कबीर, महात्मा फुले, राजर्षी शाहू महाराज से प्रभाव है। दूसरों के प्रति प्रेम का भाव होना जरूरी है। क्योंकि प्रेम के द्वारा ही मानव मन को जीता जात है, न कि हिंसा के द्वारा। अंगूलीमल के द्वारा इस बात को समझा जाता है। मिटाना असान होता है परंतु, निर्माण करना कठिन – **"मेरे प्यारे वत्स! / जोड सकते नही / तो तोडते क्यों हो ? / तोडो मत----- जोडते रहो। / - - - - - / जोडना ही है जीवन।"**[11] अत: कवि डॉ. बाबासाहेब जी के अहिंसा संबंधी तत्व को महत्वपूर्ण मानते है।

5) संविधान के प्रति जागृत :-

TRUE COPY

भारतीय संविधान मानविय जीवन मूल्यों की स्थापना करता है। मानविय जीवन को सर्वश्रेष्ठ समझता है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के अथक परिश्रम से भारतीय संविधान का निर्माण हुआ है। दलित, आदिवासी, वंचित, दीन-दलित समाज में नवचेतना निर्माण करने का काम भारती संविधान करता है। कवि 'वे सब गूँगे है', 'कहीं वे', 'नंगा नाच' जैसी कविताओं के माध्यम से संविधान के प्रति जागरूकता निर्माण करने का काम करता है। - **"वे संविधान तो नहीं बदलने जा रहे हैं। / पन्नों में गिडगिडाते हुए संविधान बोला -/ "वे तो देश की कब्र खोदने जा रहे है।"**[12] समता, स्वातंत्रता, बंधुत्व जैसे मूल्यों को बदलने की कोशिश की जा रही है ऐसे समय में कवि लोगों को संविधान के प्रति जागृत करता है।

6) मनुवादी एवं जातिवादी व्यवस्था का विरोध :-

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने वर्णव्यवस्था एवं जातिव्यवस्था का विरोध किया है। ने इस व्यवस्थ के भुक्तभोगी रहे, जिसकी पीडा वे जीवन भर सहते रहे है। शिक्षित, ज्ञानी, साफसुधरा रहने के बावजुद भी वर्ण एवं जाति व्यवस्था का वे शिकार हुए है। दुनिया के सबसे ज्ञानी व्यक्ति होने के बावजूद भी इस व्यवस्था ने उन्हें छोडा नहीं है। इसी बात से प्रेरणा लेकर कवि दामोदर मोरे ने 'दवा की तलाश', 'एकलव्य का अंगूठा', 'मनूराज' जैसी कविताओं के द्वारा मनुवाद एवं जातिवादी व्यवस्था का विरोध किया है। - **"भले ही राजनीतिक स्तर पर / चलता हो - / संविधान के अनुसार / तुम्हारा आंबेडकर राज / लेकिन / सामाजिक स्तर पर / गाँवों-गाँवों में हम / चलात है - / अपना 'मनूराज'।"**[13] 'एकलव्य का अंगूठा' कविता दलितों के गुणों को बखान करती है तो, दूसरी ओर इस वर्णवादी, ब्राह्मणवादी व्यवस्था के कारण शिकार हुए एकलव्य को भी उजागर करती है। ऐसी व्यवस्था से बहार निकालने का काम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की प्रेरणा से ही हुआ है।

7) स्त्री शक्ति का महत्व :-

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी स्त्री शक्ति को अच्छी तरह से जानते थे। चौंदार तालाब के सत्याग्रह के समय दलित अनुयायियों को समझाते समय अलग रूप से स्त्रियों को संबोधित किया था। परिणामत: स्त्रियों के खान-पान, रहना-सहेन में परिवर्तन हुआ । २१वीं शताब्दी की दलित स्त्री डॉ. बाबासाहेब के विचारों इतनी प्रभावित हुई की

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara.

२) अनेक ग्रामीण कुटुंबातून धार्मिक,सामाजिक बंधनाचे कसोशीने पालन केले जाते. यामुळे मुलींचे शिक्षण हा घटक दुर्लक्षिला जातो.
३) काही कुटुंबे मुलीचे लग्न ठरविण्यापर्यंत तिला उच्च शिक्षणासाठी पाठवतात. लग्न ठरले की शिक्षण थांबविले जाते. थोडक्यात शिक्षणाकडे वेटिंग रूम म्हणून बघितले जाते. मुलींच्या इच्छेचा विचार केला जात नाही[३]
४) बऱ्याच गावातून साधारणपणे दहावी किंवा बारावीपर्यंत शिक्षण उपलब्ध आहे. पुढील शिक्षणासाठी परगावी जावे लागते. परंतु खेडेगावातून शिक्षणाकरिता जाण्यासाठी एस.टी.किंवा इतर व्यवस्था असत नाही. एस.टी. ज्या ठिकाणी येते तिथपर्यंत काही किलोमीटर चालत जावे लागते. कॉलेजला जाऊन परत येणेही तेवढेच अवघड असते. कधी-कधी एस.टी.साठी बराच वेळ वाट पहावी लागते.
५) आजही अनेक पालकांची आपल्या मुलींना शिक्षणासाठी बाहेरगावी पाठविण्याची किंवा वसतिगृहात ठेवण्याची मानसिकता नाही. यामुळे मुलींचे शिक्षण थांबविले जाते.[४]
६) आई -वडील शेती किंवा इतर कामासाठी बाहेर जात असतील तर घरच्या कामाची जबाबदारी मुलीवर टाकली जाते. यामुळेही बऱ्याचदा मुलींचे शिक्षण थांबते.
७) प्रवासात जर मुलीला गुंड प्रवृत्तीच्या मुलाकडून त्रास दिला गेला तर त्याचे निराकरण करण्याऐवजी तिचे शिक्षण बंद करून लवकरात लवकर लग्न करून देणे अशी अनेक पालकांची मानसिकता असते.
८) शिक्षण घेऊन नोकरी मिळेल याची शाश्वती नाही. त्यामुळेही शिक्षण घेऊन काय करायचे मानसिकता आजही आहे.[५]
९) कोविड -१९ नंतर ऑनलाईन शिक्षण सुरू केले गेले. परंतु ग्रामीण भागातील अनेक मुलींकडे त्यासाठी आवश्यक असणाऱ्या सुविधा नाहीत. घरात एखादाच अँड्रॉइड मोबाईल असतो जो बहुतेकदा वडील किंवा भाऊ यांच्या ताब्यात असतो किंवा ऑनलाइन शिक्षण घेणाऱ्या मुलाला दिला जातो. नेटवर्कचीही समस्या असते. यामुळेही अनेक मुली ज्ञानापासून वंचित रहात आहेत.[६]
१०) शिक्षण घेत असताना एखादी मुलगी नापास झाली तर तिला शिक्षण पूर्ण करण्यासाठी प्रोत्साहन देण्याऐवजी तिचे शिक्षण थांबविले जाते.
११) शिक्षण सुरू असताना जर त्या मुलीचा विवाह झाला तर शिक्षण पूर्ण करण्यासाठी तिला सासरच्या लोकांकडून पाठिंबा मिळतोच असे नाही. शिक्षणापेक्षा तिने घरची कामे करावीत किंवा कर्तव्ये पार पाडावीत अशी अपेक्षा ग्रामीण भागातील अनेक कुटुंबांची असते. अपत्य प्राप्तीनंतर ही अडचण अधिक वाढते.[७]
१२) सकस आहाराच्या अभावी बऱ्याच मुली अशक्त असतात. आजारपणामुळेही कहीजणींचे शिक्षण थांबते. विशेषतः मासिक पाळीशी संबंधित आजारांवर वेळीच उपचार घेतले जात नाहीत. त्याचा विपरीत परिणाम होतो.
१३)पालकांची व्यसनाधीनता मुलींच्या शिक्षणातील अडथळा ठरते.[८]

TRUE COPY

या व अशा अनेक समस्यांना ग्रामीण भागातील मुलींना आजहीसामोरे जावे लागत आहे. आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल[९]. शिक्षणातील तफावत ही खूप आहे. उच्च समजल्या जातीपेक्षा खालच्या दर्जाच्या जातीमध्ये उच्च शिक्षण घेणाऱ्याचे प्रमाण कमी आहे.[९]म्हणून ग्रामीण भागात उच्च शिक्षणातील मुलींचे गळतीचे प्रमाण जास्त आहे. हे कमी करण्यासाठी या समस्यांचा स्वतंत्रपणे अभ्यास करून त्यावर उपाययोजना केल्या पाहिजेत,त्यांच्यासाठी विशेष सवलती, त्यांच्या गरजेनुसार अभ्यासक्रम, भौतिक सुविधा देणे गरजेचे आहे.

समारोप

शिक्षित समाज अधिक वेगाने विकास करतो आहे हे सिद्ध झाले आहे. मात्र त्यासाठी समाजाच्या दोन्ही घटकांची म्हणजे पुरुष आणि स्त्रियांचीही समान शैक्षणिक प्रगती होणे आवश्यक आहे. भारत आजही खेड्यांचादेश आहे आणि येथील मुलींचे उच्च शिक्षणातील प्रमाण कमी आहे. शहरातील मुलींपेक्षा त्यांची गरज आणि समस्या वेगळी आहे हे लक्षात घेऊन शिक्षण रचना करणे आवश्यक आहे. आवश्यक असणाऱ्या भौतिक सुविधा निर्माण केल्या पाहिजेत. ग्रामीण भागातील मुलींचे उच्च शिक्षणातील प्रमाण ज्यावेळी वाढत जाईल त्यावेळी खऱ्या अर्थाने या भागांच्या सामाजिक, राजकीय, आर्थिक विकासाला चालना मिळेल. त्यानंतरच राज्यघटनेने स्वीकारलेले समानतेचे तत्त्व अस्तित्वात येईल.

स्त्री-पुरुषांना दिल्या जाणाऱ्या जबाबदारीचे वर्णन करताना गाडीच्या दोन समान चाकांची उपमा दिली जाते पण प्रत्यक्ष व्यवहारात मात्र पुरुषांच्या तुलनेत स्त्रिया मागासलेल्या राहिल्या आहेत हे सत्य आहे. यामागे शिक्षण हे महत्त्वाचे कारण आहे हे लक्षात घ्यावे लागेल. जिथे जिथे स्त्रियांना संधी मिळाली तिथे त्यांनी आपली पात्रता सिद्ध केली आहे. स्त्रियांच्या क्षमतेचा समाज विकासासाठी पुरेपूर उपयोग करून घ्यायचा असेल तर त्याचे शिक्षण हा मार्ग आहे.एकविसाव्या शतकात जागतिक पातळीवरील अनेक आव्हानांना आपल्याला सामोरे जायचे आहे. त्यासाठी समताधिष्ठितशिक्षणप्रसार होणे, समाजातील सर्व घटक शिक्षित होणे आवश्यक आहे.

संदर्भ

१ विश्वकोश ऑनलाईन,स्त्रीशिक्षण भारतातील, https://vishvkosh.marathi.gov.in/22634
२ किता
३ बी.एल.ग्रोवर, आधुनिक भारताचा इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, एस चंद नवी दिल्ली,२०१२, पृ. ६२३
४ वि.शि. खोधीकर,सौ.उज्वला बेळकर (संपा.), मिल्हा: स्त्री शिक्षणाची वाटचाल आणि सार्वत्रिक शिक्षण, भारतीय इतिहास संकलन समिती पुणे, २००४ पृ.१७८
५ मिनल नरवणे,भारतातील शैक्षणिक आयोग व समित्या,नूतन प्रकाशन पुणे पृ. १-२
६ जयश्री शिंदे,भारतातील उच्च शिक्षण: महिलांसाठी सुसंधी, दैनिक महाराष्ट्र टाईम्स,२सप्टेंबर २०१८
७ विश्वकोश ऑनलाईन,ग्रामीण शिक्षण, https://vishvkosh.marathi.gov.in/22634
८ डिसीलवाद,इंडिया सिन्स इंडिपेंडन्स,के.सागर पब्लिकेशन्स, पुणे,२०१४, पृ.४११,मुलाखत-मुस्कान नायकवडी,(विद्यार्थिनी वेदाळ), दि. ३०/६/२०२१
९ मुलाखत- सुनीता देठे, (शिक्षिका ज्युनिअर कॉलेजरवाळी) दि-१/७/२०२१

36
PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon,Dist-Satara.